Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.shisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2023 SHISRRJ | Volume 6 | Issue 6
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

भट्टि काव्य या रावण वध में श्रीराम का स्वरूप

राजेश कुमार मिश्र
शोध छात्र, हिन्दी विभाग, हण्डिया पी0जी0 कॉलेज, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश।
डॉ० प्रद्युम्न सिंह
सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, हण्डिया पी0जी0 कॉलेज, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश।

Article Info
Publication Issue :
November-December-2023
Volume 6, Issue 6
Page Number : 268-271

Article History
Received : 02 Nov 2023
Published : 21 Nov 2023

शोधसारांश– नाटक में गद्य और पद्य दोनों का आनन्द प्राप्त हो जाता है विश्व के प्रत्येक साहित्य में नाटकों का सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। कतिपय नाटकों में श्री राम के स्वरूप का चित्रण इस रीति से उद्घटित है।

मुख्य शब्द– भट्टिकाव्य, रावण, श्रीराम, साहित्य, रीति, सत्यप्रतिज्ञ।

भट्टि काव्य संस्कृत की उस महाकाव्य परम्परा का संकेत करता है, जिसमें महाकाव्यों के द्वारा व्याकरण के नियमों का प्रदर्शन कवि का ध्येय रहा है। भट्टि ने अपने काव्य का इतिवृत्त रामायण से लिया है। रामचन्द्र जी के जन्म से लेकर राज्याभिषेक तक रामायण कथा को 22 सर्गों के काव्य में निबद्ध किया गया है। भट्टिरवामी का ग्रन्थ उन्हीं के नाम पर भट्टिकाव्य कहलाता है। इसे रावण–वध भी कहते हैं। इस महाकाव्य का सुन्दर उद्देश्य यह है कि मनोरंजन के साथ–साथ संस्कृत व्याकरण तथा अलंकारशास्त्र का पूर्ण ज्ञान पाठकों को प्राप्त हो जाय। संस्कृत व्याकरण के कठिन होने के कारण देववाणी के कुछ सच्चे भक्तों को इसे सरल बनाने की चिन्ता थी। भट्टिस्वामी ने पूर्व विद्वानों द्वारा अनभ्यस्त मार्ग का अनुसरण बड़ी उत्तम रीति से किया–

दीपतुल्यः प्रबन्धोऽयं शब्दलक्षणचक्षुषाम।
हस्तादर्श इवान्धानां भवेत् व्याकरणदृते।।

कवि की दृष्टि में यह प्रबन्ध व्याकरण ज्ञान से मण्डित शास्त्र–चक्षु विद्वानों के लिए दीपतुल्य है, परन्तु व्याकरण से हीन व्यक्तियों के लिए तो अन्धे के हाथ पर रखे दर्पण के समान है। भट्टिकाव्य में श्रीराम का स्वास्थ्य अधोलिखित रीति से प्रकाशित है–

Copyright © 2023 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)**

श्रीराम विष्णु के अवतारी हैं। उनकी महिमा त्रैलोक में विख्यात है। जब जानकी वल्लभ राम विश्वामित्र के यज्ञ रक्षार्थ जाते हैं उस समय भी उनका ईश्वरीय रूप प्रतिपादित होता है। जब ऋषि एवं ब्राह्मण उनकी स्तुति करते हुए कहते हैं कि–

बलिर्बबन्ध जलधिर्ममन्थे, जहृनेऽमृतंदैत्यकुलं विजिग्ये।
कल्पाऽन्तदुःस्धा वक्षुधा तयोहे येनेष भारोऽति गुरूर्न तस्या।।[i]

हे राम! आपने बलि को बांधा, समुद्र का मंथन किया, अमृतहरण किया, दैत्यों को जीता और प्रलय के कारण दुखित पृथ्वी उद्धार किया, ऐसे आपके लिए यह रक्षणात्मक कार्य ज्यादा गौरवपूर्ण नहीं है।

श्रीराम अतिशय प्रकृति–प्रेमी है। वे प्रत्येक वस्तु को पास से छू–छू कर उसका आनन्द उठाना चाहते हैं। वे प्राकृतिक छटा को देखकर अतान्त मोहित होकर उसको पास जाकर कौतूहलवश देखते हैं–

लताऽनुपातं कुसुमान्यगृहात् स नद्यवस्कन्दगुपास्पृशच्च।
कुतूहलाच्चारूशिलोपदेशं काकुस्थ ईषत्स्मयमान आस्त।।[ii]

रामचन्द्र जी ने कौतुक से मन्दहास्य से कुछ हंस कर लता में पहुँच–पहुँचकर फूलों को तोड़ा, नदी में जाकर आचमन किया और सुन्दर पत्थर पर बैठ–बैठकर विश्राम भी किया।

इसी प्रकार राम ने उस प्राकृतिक छटा के असीम सौन्दर्य का अतृप्त नेत्रों से निर्मिमेष होकर रसास्वादन किया।

दिग्व्यापिनीलोचनलोभनीया भृजान्वयाः स्नेहमिव सृवन्तीः।
ऋज्वायताः शस्यविशेषपड्–कीस्तुतोष पश्यन्वितृणाऽन्तरालाः।।[iii]

श्रीराम जी दिशाओं में फैली हुई, नेत्रों को लुभाने वाली स्वच्छ स्निग्ध, सरल और दीर्घ तथा भीतर तृणों से रहित शालि आदि अनाजों की पंक्तियों को देखकर सन्तुष्ट हुए।

श्रीराम अप्रतिम वीर एवं पराक्रमी हैं। उनके पराक्रम का दिग्दर्शन बाल्यावस्था से ही होता है। जब विश्वामित्र राजा दशरथ से यज्ञ की रक्षा के लिए राम–लक्ष्मण को मांगकर ले जाते हैं तब राम यज्ञ विध्वंसक ताड़का, सुबाहु आदि राक्षस एवं राक्षसियों का नाश करते हैं तथा मारीच को तृणतुल्य समझकर दूर फेंक देते हैं। उनका अतुलनीय पराक्रम शिवधनुष भंग के समय भी परिलक्षित होता है। श्रीराम के पराक्रम का चरमोत्कर्ष परशुराम के गर्व को मिटाते समय दृष्टिगोचर होता है–

अजीगणद्दाशरथं न वाक्यं यदा स दर्पण तदा कुमारः।
धनुर्व्यकार्श्रौद्गुरुवाणगर्भ लोकानलावीद्विजितश्च तस्य।।[iv]

''जब परशुराम ने घमण्ड से दशरथ की बात (अनुनय विनय) न सुनी तब रामचन्द्र ने उनके वाणयुक्त धनु को खींचा और पुण्य से जीते गये उनके लोकों को नष्ट कर दिया।''

अतः भट्टिकाव्य का रावण वध के राम मर्यादापुरूषोत्तम, उदार, सरल एवं नीति–निपुण, भ्रातृ प्रेमी, पत्नी प्रेमी, पितृ–मातृ भक्ति, कुशल प्रजारंजक, धर्मज्ञ, सत्यप्रतिज्ञ, शरणागत वत्सल, वीर पराक्रमी, ब्राह्मणों, गुरुजनों का आदर करने वाले तथा अनेक दिव्य गुणों से युक्त विष्णु के अवतार हैं। वे सांसारिक प्राणियों के तुल्य आचरण करके अपने महनीय गुणों का प्रतिपादन करते हैं। रावण वध ने अध्ययन से राम के अनेक लोक तथा लोकोत्तर गुण प्रकाशित हैं।

(ख) संस्कृत नाटकों में राम का स्वरूपः–

किसी भी भाषा और साहित्य तथा उसके अंगों और उपंगों के जन्म की निश्चित तिथि को निर्धारित कर देना सदैव बहुत कठिन कार्य रहा है। क्योंकि साहित्य एक सतत प्रस्रवणशील स्रोत होता है। उसके वास्तविक आद्यन्त का दिन नहीं निर्धारित किया जा सकता है। फिर भी, एक युग के लम्बे क्षेत्र में जन्म और समाप्ति की वाह्य रूप रेखाएँ पहिचानने का प्रयत्न किया जाता है।

भारतीय परम्परानुसार जिसका वर्णन भरत–प्रणीत नाट्यशास्त्र में हैं, नाट्योत्पत्ति का वर्णन आख्यानात्मक ढंग से किया गया है। नाट्कशास्त्र में नाटकोत्पत्ति की देवी परम्परा प्रतिपादित है। भरत के अनुसार देवताओं की प्रार्थना पर मनोविनोदनार्थ ब्रह्मा ने ऋग्वेद से पाठ्य सामवेद से नीति, यजुर्वेद से अभिनय और अथर्ववेद से रस लेकर नाट्यवेद का निर्माण किया है–

जग्राह पाठ्यमृग्वेदात सामभ्यो गीतिमेव च।
यजुर्वेदादभिनयान रसानाथर्पणादपि।।[v]

तदन्तर अभिनय संकेत भी ब्रह्मा ने भरतमुनि को प्रदान किया। नटराज शिव ने ताण्डव तथा भगवती पार्वती ने लास्य नृत्य से नाट्य का अभिनय सर्वप्रथम हुआ। नाट्य शब्द जो रूपक का याची है सर्वप्रथम भरत के नाट्यशास्त्र में शीर्ष स्थान प्राप्त करता है। भरत नाट्यशास्त्र को कलाओं का 'विश्वकोष' कहा जाता है। ललित कलाओं में काव्य कला और विद्याओं में साहित्य विद्या अन्यतम पदभागी है। ब्रह्मानन्द सहोदर रसानुभूति काव्य के सरस, सरल और सहज माध्यम से ही सर्वदा होती रहती है। काव्य के अनिवचनीय आनन्द की सत्ता सभी पाश्चात्य और पौर्वात्य विद्वान स्वीकार करते हैं। प्राचीन युग के ऋषि 'रसोवे सः' जिस रस की उपमा ब्रह्म से देते थे, उस साहित्यिक जगत के

मनोवैज्ञानिक रूप वाले रस की अनुभूति प्राचीन साहित्यशास्त्री– जिसकी अनुभूति परम्परा आचार्य भरत ने, विभावानुभाव व्यभिचारि संयोगवाद रस निष्पत्तिः से व्यक्त की है– दृश्य काव्य तक ही सीमित मानते थे। एक युग था, जबकि अलंकार श्रवकाव्य की और रस दृश्यकाव्य की आत्मा माने जाते थे। समय के साथ–साथ रस की सत्ता का साम्राज्य काव्य जगत के प्रत्येक क्षेत्र में हो गया और आज काव्य की आत्मा के रूप में रस सिद्धान्त सभी को स्वीकार है।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि नाटक में गद्य और पद्य दोनों का आनन्द प्राप्त हो जाता है विश्व के प्रत्येक साहित्य में नाटकों का सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। कतिपय नाटकों में श्री राम के स्वरूप का चित्रण इस रीति से उद्घटित है।

सन्दर्भ सूची

---

[i] भट्टिकाव्य, रावणवध, भट्टि सर्ग–2, श्लोक–39

[ii] भट्टिकाव्य, भट्टि सर्ग–2, श्लोक–11

[iii] भट्टिकाव्य, भट्टि सर्ग–2, श्लोक–13

[iv] भट्टिकाव्य, भट्टि सर्ग–2, श्लोक–53

[v] संस्कृत साहित्य की रूपरेखा, स्व0 पं0 चन्द्रशेखर पाण्डेय व शान्ति कुमार नानूराम व्यास, पृ0–72 (1/17)